विक्रम संवाद

पाक्षिक आलेख सेवा/नि:शुल्क वितरण के लिए

सम्पादक
महाराजा विक्रमादित्य शोध पीठ
1, उदयन मार्ग, उज्जैन-456010
फोन : 0734-2521499, 0755-2660407
e-mail : mvspujjain@gmail.com
vikramadityashodhpeeth@gmail.com

इस अंक में

पृष्ठ क्र. 1-3
वास्तु विशेषज्ञ भी थे कवि कालिदास
डॉ. मुकेश शाह

पृष्ठ क्र. 3-4
विक्रमादित्य की लोक वारतां
डॉ. पूरन सहगल

पृष्ठ क्र. 5-6
जल जीवन है और औषधि भी
डॉ. पूजा उपाध्याय

पृष्ठ क्र. 7
अब 'विक्रम बानी' सुनायेगा विक्रम गाथा

पृष्ठ क्र. 8
पुस्तक चर्चा
राजा भोज और परमारकालीन नगर स्थापत्य
मनोज कुमार

वास्तु विशेषज्ञ भी थे कवि कालिदास

डॉ. मुकेश शाह

कालिदास की प्रतिष्ठा एक कवि के रूप में रही है किन्तु उपलब्ध तथ्य यह बताते हैं कि कालिदास अनेक विधाओं के ज्ञाता थे। अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि कालिदास के ग्रन्थों में भारतीय स्थापत्य के अनेक संदर्भ बिखरे हुए दिखाई देते हैं। स्थापत्य को कालिदास ने वास्तु के नाम से सम्बोधित किया है, जिसमें नगर स्थापत्य का सम्पूर्ण परिदृश्य स्पष्ट होता है। इस युग में नगर-योजना बहुत व्यवस्थित थी। नगर सड़कों के द्वारा विभाजित थे। मुख्य सड़क राजमार्ग कहलाती थी, जिसे राजपथ तथा नरेन्द्र मार्ग कहा गया है, जो कि नगर के मध्य से होकर गुजरती थी तथा देश के विभिन्न नगरों से जुड़ी होती थी। नगरों में व्यस्ततम बाजार होते थे। कालिदास ने उज्जयिनी के बाजारों, 115 सड़कों तथा मकानों की चर्चा मेघदूत में की है। कालिदास ने अन्यत्र भी बाजारों तथा मकानों की चर्चा की है। राजधानी अथवा भव्य नगरों में गगनचुम्बी प्रासाद तथा भवन होते थे, जो सफेद रंग से पुते हुए होते थे। घरों में बावड़ी होती थी, जिसकी सीढ़ियाँ अलंकृत होती थी। नगर के चारों ओर परकोटा, खाई, दीर्घद्वारों (गोपुरद्वार) इत्यादि का वर्णन कालिदास ने किया है।

उपर्युक्त वर्णन से सड़कों की निश्चित लम्बाई का ज्ञान होता है। पूर्व युग में मालवांचल में प्राचीन सड़कों के पुरातात्विक प्रमाण उज्जयिनी के गढ़कालिका क्षेत्र तथा नागदा इत्यादि क्षेत्रों से मिले हैं। नागदा से पत्थर की सड़क के प्रमाण मिले हैं तथा उज्जयिनी में ईंट की बनी सड़कों के प्रमाण मिले हैं जो कि राजपथ ही प्रतीत होती है। कालिदास द्वारा वर्णित राजपथ एक बड़ा मुख्य मार्ग, बड़ी सड़क अथवा सार्वजनिक मार्ग था। राजवीथी सार्वजनिक अथवा राजमार्ग का एक और अन्य नाम था।

राजप्रासाद

राजप्रासाद विस्तीर्ण भवन होते थे, जो उपयुक्त नाप वाले आन्तरिक एवं बाह्य कमरों से सुसज्जित थे। राजप्रासाद बहुमंजिला होते थे। इसके साथ-साथ छत तोरण, बरामदे, प्रांगण, सभागृह, कैदीगृह, दरबार, विशालद्वार इत्यादि राजप्रासादों की विशेषताएँ थीं। इन राजप्रासादों के भवनों को भी अनेक नामों से सम्बोधित किया जाता था, यथा- विमानप्रतिच्छन्द, मणिहर्म्य, मेघप्रतिच्छन्द, देवच्छन्दक इत्यादि। ये नाम कवि की केवल कोरी कल्पना मात्र नहीं है, अपितु ये भवन विशिष्टीकृत राजप्रासादों के भवन थे, जिनका वर्णन मानसार में भी हुआ है। विमानप्रतिच्छन्द भवन को मत्स्य पुराण में विमानच्छन्द के नाम से अभिहीत किया गया है। वहाँ पर इस भवन का उल्लेख आठ मंजिला भवन के रूप में किया गया है, जिसके मुख्य भाग तथा ऊपरी हिस्से की चौड़ाई हाथ (एक हाथ आधा गज) मानी गई है।

मणिहर्म्य भी एक विशेष प्रकार का भवन माना गया है। पी.के. आचार्य ने इसे ऊपरी मंजिल के रूप में उद्धृत किया है, साथ ही यह स्फटिक तथा रत्नों का बना भवन था। संभवत: यह मार्बल पत्थर की बनी हुई इमारत होती थी।

उपर्युक्त वर्णित भवनों के अतिरिक्त समुद्रगृह भवन का उल्लेख भी हमें कालिदास के ग्रन्थों में मिलता है। यह भवन गर्मी से बचने के लिए ठण्डे स्थानों पर बनाया जाता था जो कि चारों तरफ से फव्वारों से घिरा होता था। साथ ही इस भवन में एक बगीचा भी होता था, जहाँ राजा गर्मी के दिनों में भी सुहावने मौसम का आनन्द लेता था। समुद्रगृह का वर्णन मत्स्यपुराण, भविष्यपुराण तथा वृहत्संहिता में भी आया है, जहाँ इसे एक विशेष प्रकार का भवन बताया गया है। मत्स्य पुराण में इसे सोलह भागों का द्वितलीय भवन बताया गया है।

राजभवनों के अतिरिक्त अन्य गृहों का वर्णन भी कालिदास के ग्रन्थों में मिलता है। सौध और हर्म्य इन्हीं में से एक है, जिनका वर्णन मेघदूत में ऊँची-छत वाले उज्जयिनी के भवनों के रूप में हुआ है। इन भवनों में कबूतरों के शयन का स्थान भी होता था। ऐसा माना जाता है कि कबूतर अपना घोंसला ऊँचे भवनों में ही बनाते हैं। कालिदास ने अलकापुरी के भवन की तुलना कुबेर की नगरी से की है, जिनके शिखरों से मेघ टकराते थे। ऐसे भवनों को अभ्रंलिहाग्रा अथवा अभ्रंलिह के नाम से पुकारा गया है। ये भवन ईंटों के द्वारा बनाये जाते थे तथा इन्हें सफेद चूने के द्वारा पोता जाता था, जिसके लिए सौध शब्द का प्रयोग किया गया है। धौत (धौतहर्म्य) शब्द का भी यही महत्व है। चूने, पत्थर और ईंटों के अतिरिक्त संगमरमर का प्रयोग भी भवन निर्माण में होता था, जिसके लिए मणिशिला गृह शब्द का प्रयोग किया गया है, जो कि अमीर लोगों के घर होते थे। घरों की छतों को ढलान में बनाया जाता था, ताकि बारिश का पानी आसानी से बह जाए और छत पर जमा न हो, इस तरह की ढलान वाली छतों के वलभी कहा जाता था।

कालिदास ने भवन शब्द का प्रयोग सामान्य लोगों के निवास-स्थल के लिए किया है, जो कि आयताकार होते थे तथा चहारदीवारी से घिरे होते थे, जिसमें एक खुला बरांडा होता था। भवन के आंतरिक कक्षों में शयनकक्ष, अग्न्यागार, गर्भवेश्म, क्रीड़ागृह, भण्डार गृह तथा अन्य कक्षों का समायोजन था। घरों में खिड़कियाँ होती थी जो कि गलियों की तरफ खुलती थी। इस प्रकार की व्यवस्था सिंधु-सभ्यता में भी प्रचलन में थी। घरों में अलिंद भी होते थे। घरों का पुरोभाग (अगला भाग) मुख कहलाता था जो कि दरवाजा भी था। दरवाजों के ऊपर सोहावटी (स्पदजमस) होता था, जो कि दरवाजों को सहारा देता था तथा यह कभी-कभी साधारण आर्च तथा कभी मत्स्य अथवा मगरमच्छ की आकृति वाला होता था। तोरण के निचले भाग में देहली होती थी। अनेक मंजिला भवनों में बरांडा भी होता था। सबसे ऊपरी मंजिल पर अटारी (छत पर का कमरा) भी होती थी जिसे तल्प कहा जाता था।

तोरण

तोरण, छत अथवा बरामदे का मेहराब होता था। प्राय: यह किसी राजप्रासाद अथवा नगर के बाहरी दरवाजे की शोभा बढ़ाता था। यह द्वार परम्परा का द्योतक है जो कि सामान्यतया यह एक प्रकार का अस्थायी शृंगारिक मेहराब होता था जो घरों के दरवाजों पर अथवा किसी विशिष्ट अतिथि के स्वागत हेतु सड़कों पर सुशोभित किया जाता था, जिसके प्रवेश को द्वार अथवा मुख कहते थे। तोरण को पारिभाषिक रूप से यह कहा जा सकता है कि 'यह किसी कठोर वस्तु के खण्डों की एक वक्र रेखा में अथवा भवन के अनेक वास्तु शृंगारों का एक-दूसरे के दबाव को सहन करने की एक सहायक तथा यांत्रिक व्यवस्था थी। ये मेहराब वास्तुगत एवं शृंगारगत दोनों ही दृष्टियों से अनेक देवताओं, ऋषियों, उपदेवताओं, राक्षसों-प्रेतों, मगरमच्छ, मत्स्य, सर्प, सिंह तथा पुष्पों, पत्तियों एवं लताओं इत्यादि से अलंकृत रूप में उकारे जाते थे।

जल-फव्वारे (जल-फौवारा)

कालिदास ने एक बहुत सुन्दर वैज्ञानिक तकनीकी का विश्लेषण अपने ग्रन्थ में किया है तथा जिसे वारीयंत्र नाम से अभिहीत किया है। इस वारीयंत्र को फव्वारा अथवा जल-चक्र

भी कहा जा सकता है, जो कि बगीचों में स्थित होता था तथा जिनके लिए मालविकाग्निमित्रम् में कहा गया है कि 'चलते हुए रहट (वारीयंत्र) से उछलती हुई पानी की बूँदें पीने के लिए मोर उसके चारों ओर चक्कर काट रहे हैं।' वस्तुत: यह रहट जल-फव्वारे के साथ-साथ कृषियंत्र में भी काम आता रहा होगा, इससे तद्युगीन कृषि व्यवस्था का भी ज्ञान होता है, जिसमें सिंचाई के साधन के रूप में रहट का प्रयोग होता था। इस प्रकार के वर्णन कालान्तर में मृच्छकटिकम् तथा भोज के ग्रंथ समरांगणसूत्रधार में भी प्राप्त होते हैं।

दीर्घिका, वापी तथा कूप

दीर्घिका वस्तुत: एक लम्बा संकुचित जलाशय, पोखर अथवा तालाब या जलकुंड होता था, जबकि वापी को प्रो. आचार्य ने एक बावड़ी अथवा कुएँ के रूप में संदर्भित किया है, जिसमें कि जल संचित रहता था। कालिदास ने इसे एक खूबसूरत बावड़ी के रूप में व्याख्यायित किया हैं। संभवत: दीर्घिका तथा वापी दोनों ही बावड़ियाँ थीं, जिसमें अन्तर केवल इतना था दीर्घिका एक लंबा संकुचित जलाशय था, जबकि वापी वर्गाकार होती थी। कवि ने गृहदीर्घिका का भी वर्णन किया है, जो कि दीर्घिका से भिन्न थी, क्योंकि दीर्घिका सार्वजनिक बगीचों में स्थित होती थी।

इसी प्रकार वापी के विषय में कवि ने कहा है कि यह पक्की सीढ़ियों वाली होती थी। इन सीढ़ियों पर नीलम जड़े होते थे। दीर्घिका में सुन्दर तथा गूढ़ विलास-गृह भी होते थे। कूपों का वर्णन भी कालिदास ने किया है जो कि सामान्य कुएँ होते थे।

इस प्रकार कालिदास ने प्राचीन भारत एवं मालवा के वास्तुशास्त्र का सुन्दर और वैज्ञानिक परिचय अपने ग्रन्थों से हमें करवाया है, जिससे विक्रमादित्ययुगीन स्थापत्य कला का ज्ञान होता है।

यूट्यूब चैनल 'भारत विक्रम' देखने के लिए लॉगइन करें

https://youtube.com/channel/UCpeZ-d1AJUKlJtSKpiHuUJw

विक्रमादित्य की लोक वारतां

डॉ. पूरन सहगल

विक्रमादित्य की यह लोक वार्ता वर्तमान पाकिस्तान के मुलतान भाहर से भी ऊपर जिला मियांवाली के एक छोटे से पिंड (गाँव) ''भरमी'' के एक कवि (शायर) परमजीत ने लिखी थी। जिसे उस पूरे अंचल में उसने खूब गाया-सुनाया था। मेरा गाँव ''पंचगृही'' भी एक छोटा सा गाँव था। परमजीत बहुधा मेरे गाँव आया करता था और मेरे घर अतिथि रहता था। वह मेरे परिवार का रिश्तेदार भी था। उससे मेरे पिता ने उस वार्ता को कई बार सुना और उसे कंठस्थ कर लिया। उस काल में मनोरंजन के साधन ऐसे ही किस्से-कथाएँ, गीत-गाथाएँ ही होते थे। लोग रात में बैठ कर इनका आनंद लेते थे।

विक्रमादित्य, भोज, गोपीचन्द, भरथरी और भक्त पूरन के किस्से, गीत आदि उस अंचल में खूब गाए जाते थे।

''विक्रमाजीत दी वारतां'' का लेखन पंजाबी की उपबोली लंहदी जिसे लोक में मुलतानी भी कहा जाता था, किया गया है।

इस चौसठ पदों की गाथा में जिस प्रकार मालवा, उज्जैन, महाकाल, नर्मदेश्वर (औंकारेश्वर), पशुपतिनाथ, क्षिप्रा, शिवना, चम्बल, नर्मदा नदियों का वर्णन किया गया है, उससे लगता है कुछ तीर्थ यात्रियों ने जब इस अंचल की यात्रा की होगी, तब उन्होंने यहाँ का वर्णन उस अंचल में किया होगा। उसी वर्णन को आधार बनाकर वहाँ के शायरों ने अपनी शैली में ऐसी वार्ताएँ गीत और किस्से कहानियाँ बनाकर लोक चर्चित की होंगी। संस्कृतियों का ऐसा आदान-प्रदान सदा से होता चला आ रहा है।

मैंने अपने लेख में लिखा है ''लोक साहित्य के पैर नहीं होते हैं। पंख होते हैं। वह अपने पंखों से सात समुद्र पार तक की यात्रा करके पुन: स्वस्थान लौट आता है। वहाँ कुछ दे भी आता है और कुछ ले भी आता है।'' इस गाथा (वारतां) में भी यही हुआ है। वार्ताकार ने मालावा का एवं उज्जैन को तथा विक्रमादित्य

का जैसा महनीय वर्णन किया है हम उस पर गर्व कर सकते हैं।

मालवा की हरियाली, जल की बहुलता, जल पूरित सलिलाओं, अन्न-धन की बहुलता, सुख, वैभव एवं खुशहाली का वर्णन करते गाथाकार कहता है। मालवा तो मेरे पंजाब जैसा खुशहाल है। यहाँ भी पाँच नदियाँ बहती है और मालवा में भी पाँच नदियाँ हैं। उसने नदियों के नाम तक गिनाएँ हैं। गाथाकार ने दशपुर और यहाँ शिव तीर्थ होने का भी उल्लेख किया है।

विक्रमादित्य के शौर्य, वीरता का वर्णन करते हुए वह कहता है कि शत्रु विक्रमादित्य का नाम सुनकर ही भाग खड़े होते थे। विक्रमादित्य ने बाहरी शत्रुओं को खदेड़ कर बाहर कर दिया। उन पर जीत हासिल की इसलिए उसे विक्रमाजीत कहते हैं। उसने उस खुशी में अपना एक सम्वत् चलाया।

विक्रम की दानशीलता, शिव भक्ति, सहजता, गुणवानों के प्रति सम्मान और प्रजा बहुलता तथा सुशासन का वर्णन वार्ता में किया है। वार्ताकार कहता है कि विक्रमाजीत प्रतिदिन महाकाल के दर्शन करने जाता था। पूजा-ध्यान के पश्चात वह गरीबों को भोजन बाँटता और दान करता था।

वार्ताकार ने विक्रमादित्य की शनि साढ़े साती का भी वर्णन किया है। यह वर्णन अत्यंत संवेदनशीलता के शब्दों में किया गया है। वार्ताकार के अनुसार उस कठिन समय में भी विक्रमाजीत ने अपना धैर्य और धर्म नहीं डिगने दिया। साढ़े साती समाप्त हो जाने के पश्चात स्वयं शनिदेव प्रकट हुए और उन्होंने विक्रम की धर्मनिष्ठा पर उन्हें सराहा। शनिदेव ने कहा ''विक्रम तुम्हारा राज्य यथावत स्थिर है। तुम अपने देश लौट जाओ। तभी रथ-घोड़े आ जाते हैं। विक्रमदित्य की जय-जयकार होने लगती है। फिर से विक्रम का इन्द्र दरबार सजने लगाता है।

वार्ता में भरथरी, कालिदास और बेताल भटट् का भी वर्णन किया गया है। बत्तीस पुतलियों वाले सिंहासन पर उसके गुणों का वर्णन भी वार्ता मे है।

वार्ता में एक बात अत्यंत महत्वपूर्ण यह भी है कि एक शायर आलमशाह ''मशहूरी'' ने बेताल पच्चीसी के किस्से अपनी जबान में लिखे थे और उसे सब जा-जाकर वे सुनाते थे।

इसी प्रकार एक और वार्ता जिसे डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित ने ''प्राचीन मालवी गाथाएँ'' नाम से मेरी पुस्तक प्रकाशित कर तथा उसमें पंजाबी की उस वार्ता को शामिल कर किया था। इस प्रकार ये दोनों पंजाबी लोक वार्ताएँ (गाथाएँ) अविभाजित हिन्दुस्तान के दूरस्थ अंचल की ऐसी रत्नमणियाँ हैं जो मालवा और विक्रमादित्य के यश बखान के रूप में आज हमारे पास सुरक्षित हैं। इनके रक्षित और सुरक्षित होने की कथा लम्बी व जटिल है।

मैंने एक जगह लिखा है - घटना से कथा और कथा से गाथा का जन्म होता है तथा गाथा में महाकाव्य के बीज निहित रहते हैं। यदि उचित भूमि, जल, ताप, रक्षा मिल जाए तो वे पनपाए जा सकते हैं। इन दोनों गाथाओं में भी ये बीज उपस्थित हैं। समय की कुशल सर्जक की प्रतीक्षा तो करना ही होगी।

इस गाथा (वार्ता) को मैंने पहले संत जेठछानंद से सुना, उसे उल्लेखित किया, फिर स्वर्गीय रूपचन्द की पोथी (जो उर्दू में लिखी थी) उससे मिलान कर उसे पुनर्लेखित कर उसका उस मीटर में हिन्दी में अनुवाद किया।

लेखकों से निवेदन

महाराज विक्रमादित्य शोध पीठ का नवीन प्रकल्प **'विक्रम संवाद'** पाक्षिक आलेख सेवा है. विभिन्न प्रकाशन-प्रसारण माध्यमों को नि:शुल्क प्रेषित किया जाता है. इस आलेख सेवा का उद्देश्य प्रमाणिक एवं अज्ञात तथ्यों से पाठकों का परिचय कराना है. आपके पास ऐसी कोई सामग्री हो तो कृपया हमें भेजें.

-संपादक

जल जीवन है और औषधि भी

डॉ. पूजा उपाध्याय

जल जीवन का आधार है। वेदों में जल को पुष्टिवर्धक, आयुवर्धक तथा स्वास्थ्यवर्धक कहा है। ऋग्वेद में कहा है कि जल में अमृतोपम गुण हैं, औषधीय गुण हैं, सभी औषधियाँ जलों से ही प्राप्त होती है जल रोगों का शमन करता है-

''अप्स्वन्तरमृतमप्सु भेषजमपामुत प्रषस्तये।
देवा भवत वाजिनः।।ऋ.1.23.19।।

''अप्सु में सोमो अब्रवीदन्तर्विष्वानि भेषजा।
अग्निं च विश्वषम्भुवमापलच विश्वभेषजीः।। ऋ 1.23.20।।

दीर्घायुष्य के लिए जल देवता से जीवन रक्षक औषधियों को शरीर में स्थापित करने हेतु स्तुति की गई है-

''आपः पृणीत भेषजं वरूथं तनवे मम।
ज्येक् च सूर्यं दृषे।।ऋ 1.23.21।।30

अथर्ववेद में जल को समस्त रोगों की औषधि कहा गया है। स्नान-पान आदि के द्वारा यह जल ही औषधि रूप में सभी रोगों को दूर करने वाला कहा गया है-

''आप इद् वा उ भेषजीरापो अमीवचातनीः।
आपो विश्वस्य भेषजीस्तास्त्वा
मुंचन्तु क्षेत्रियात्।।अथर्व.3.9.5।।31

अथर्ववेद में जल को क्रियाशक्ति उत्पन्न करने वाला प्रेरित करने वाला कहा है-

''ओता आपः कर्मण्या मुंचन्त्वितः प्रणीतये।
सद्यः कृण्वन्त्वेतवे।। अ.6.23.2।।
शं नो भवन्त्वप औषधी शिवाःअ. 6.23.3।।

अथर्ववेद के अनुसार पर्वतों से निकलने वाली नदियों का शुद्ध जल हृदय रोगों का निवारक है तथा आँखों पैरों इत्यादि में होने वाली पीड़ा को भी जल शान्त करता है।

''हिमवतः प्रस्रन्ति सिन्धौ समह सङ्गमः।
आपो ह मह्यं तद् देवीर्ददन् हृदद्योतभषजम्।।अ.6.24.1।।
'यन्मे अक्ष्योरादिद्योत पार्ष्ण्योः प्रपदोलच यत।
आपस्तत् सर्वं निष्करन् भिषजां सुभिषक्तसमाः।।अ.6.24.2।।

वेदों के अनुसार प्रवाह मान जल शुद्ध व निरोगी रखने वाला होता है। अथर्ववेद में पतिरूप समुद्र की और पत्नी रूप प्रवाहमान नदियों केजल को स्वास्थ्यवर्धक तथा बलवर्धक कहा है-

''सिन्धुपत्नीः सिन्धुराज्ञीः सर्वा या नद्य स्थन।
दत्त नस्तस्य भेषजं तेना वो भुनजामहै।। अ. 6.24.3

वृष्टि जल यक्ष्मा रोग का नाशक है, ऐसा उल्लेख प्राप्त होता है-

''आ पर्जन्यस्य वृष्ट्योदस्थामामृता वयम्।
व्यहं सर्वेण पाप्मना वि यक्ष्मेण समायुषा।। अ.3.31.11।।33

ऋग्वेद में समस्त जल की औषधीय गुणों से युक्त कहा है-

''निश्ध्वरीरोषधीराप
आस्तामिन्द्रावरूणा महिमानमाशत।'' ऋ 8.59.2।।34

औषधियों के विकास के लिए भी जल आवश्यक है तथा कई औषधियों जल में स्वतः उत्पन्न होती है। जल में विविध पोषक तत्व निहित होते हैं-

''पयःपृथिव्यां पयऽओष्धीषु पयो दित्यन्तरिक्षे पयोधाः।
पयस्वतीः प्रदिषः सन्तु मह्यम।। यजु.18.36।।36

अथर्ववेद में जलीय वनस्पतियों से रोग निवारण का उल्लेख जल के महत्व को प्रतिपादित करता है। षैवालादि में पैदा होने वाली जलोदरादि रोग निवारण की प्रचण्ड क्षमता से सम्पन्न विषनाषक, कफनाशक और मारक प्रयोगों की नाशक औषधियाँ जल से ही प्राप्त होती हैं। ऐसा वर्णन वेद में प्राप्त है-

''अग्नेर्धासो अपां गर्भो या रोहन्ति पुनर्णवाः।।
ध्रुवाः सहस्त्रनाम्नीर्भेषजीः सन्त्वा भूताः।।अ.8.7.8।।
'अवकोल्बा उदकात्मान ओषधयः।
व्यृषन्तु दुरितं तीक्ष्णषृङ्गयः ।।अ.8.7.9।।
''उन्मुंचन्तीर्विवरूणा उग्रा या विषदूषणीः।
अथो बलासनाषनीः कृत्यादूषणीष्च यास्ता
इहा यन्त्वोषधीः।।अ.8.70.10।।37

अथर्ववेद में जल को माता और बहन की उपमा देना उसके स्नेही तथा कल्याणप्रद स्वरूप को सिद्ध करते हैं-

''अम्बयो यन्त्यध्वभिर्जामयो
अध्वरीयताम्। पृंचतीर्मधुनापय: ।।अ.1.6.1।।
''यो व: षिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह न: ।
उषतीरिव मातर: ।अ.1.6.2।।

इस प्रकार जल में औषधत्व गुण को नमस्कार करने के लिए ऋषियों ने जल को देवता के रूप में प्रतिष्ठित किया-

''षं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये।
षं योरभि स्त्रवन्तु न: ।।अ.1.6.1।।38

3.4 वेदों में जल संरक्षण का सन्देश-

यद्यपि वैदिक काल प्रदूषण रहित रहा होगा क्योंकि उस समय न तो भौतिक विकास की ऐसी अभिलाषाएँ थी और न ही अपार जनसंख्या थी, तथापि वैदिक ऋषियों ने दूरदृष्टि से हजारों वर्षों के भविष्य को देखकर पर्यावरण को प्रदूषण से मुक्त रखने का सन्देश दिया। वेदों में जल प्रदूषण को रोकने तथा उसे संरक्षित करने के लिए विविध सन्देश प्राप्त होते हैं। यजुर्वेद में स्पष्ट उल्लेख है कि औषधियों एवं जल को यथास्थान सुरक्षित रखें, उन्हें नष्ट न करें-

''माऽपो मौषधीहि सीर्धाम्नो
धाम्नो राजॅस्ततो वरूण नो मुंच।.....
सुमित्रिया नऽआपऽ ओषधय: सन्तु... ।ऋ 6.22 ।39

ऋग्वेद में भी स्पष्ट रूप से कहा गया है कि इन्द्र हमें विषरहित अन्न,जल व वृक्षादि प्रदान करें-

''नू गृगानो गृणते प्रत्न राजन्निष: पिन्व वसुदेयाय पूर्वी: ।
अप ओषधीरविषा वनानि गा
अर्वतो नृनृचसे रिरीहि।। ऋ 6.39.5 ।40

सूर्य किरणों के सान्निध्य से जल पवित्र हो जाता है अर्थात् उसके कीटादि नष्ट होते हैं अत: उसके उपयोग का निर्देश ऋग्वेद में दिया गया है-

''असूर्या उप सूर्ये याभिर्वा सूर्य: सह।
ता नो हिन्वन्त्वधरम्। ।ऋ1.23.17 ।41

इस प्रकार स्पष्ट होता है कि वैदिक ऋषियों ने जल के स्वरूप उसकी उपयोगिता और संरक्षण सर्वविध पक्षों पर चिन्तन किया है।

विक्रमादित्य की शिल्प साधना

संवत् प्रवर्तक विक्रमादित्य के सम्बन्ध में एक कहानी है कि उसके राज्य में कोई विक्रेता निराश नहीं होता था। एक बार एक मूर्तिकार एक दरिद्र की प्रतिमा बनाकर उज्जैन के बाजार में बेचने के लिए दिन भर बैठा रहा। पर दरिद्र की प्रतिमा सुन्दर होने पर भी लक्ष्मी के रूठने के डर से वह प्रतिमा किसी ने नहीं खरीदी। साँझ होने लगी। कलाकार निराश हो गया। राजा को ज्ञात हुआ तो विक्रमादित्य ने उसे खरीद लिया। तब लक्ष्मी रूठ कर उसके महल से चली गयी।

इस कहानी से राजा का कलाप्रेम ज्ञात होता है। प्रबन्ध कोश के अनुसार अपने राज्य को रामराज्य बनाने की अभिलाषा में विक्रमादित्य ने अपने राज्य में स्थान स्थान पर अनेक मंदिर बनवाये थे और राम की स्वर्ण पादुका के अन्वेषण में उसने अयोध्या में उत्खनन करवाया था। अन्तत: वह पादुका प्राप्त हो गयी। एक परम्परानुसार इस राजा ने उज्जैन में महाकाल का मंदिर बनवाया।

भविष्य पुराण के अनुसार - महाकाल मंदिर परिसर में उसने अपनी सुन्दर राजसभा बनवायी थी। उसमें उसने अपना बत्तीस पुतलियों वाला सिंहासन रखवाया। उस पर बैठकर विप्र रूपधारी वेताल से उसने वेताल पच्चीसी की समस्यामूलक कहानियाँ सुनकर उनका समाधान किया था। इन नव-निर्मित भव्य और आकर्षक मंदिर और वहाँ की पूजा व्यवस्था का ललित चित्रण कालिदास ने अपने मेघदूत में किया। तदनुसार उसमें नृत्यरत अनेक भुजाओं वाले पशुपति शिव के पास खड़ी पार्वती युगल की प्रतिमा थी। मंदिर के पास में ही राजमहल भी था। मंदिर से सटा उद्यान था और उसके पास ही गन्धवती नदी बहती थी। इस महाकाल मंदिर क्षेत्र में ही बाद में इस विक्रमादित्य की प्रतिमा स्थापित की गयी थी।

1235 ई. में अल्तमश उस पाषाण प्रतिमा को दिल्ली ले गया और वहाँ उसे नष्ट कर दिया। अब इतनी पुरानी उस राजा की प्रतिमा शेष नहीं हैं। अब तो आँध्र के आलमुरू (राजमहेन्द्र से तीस किलोमीटर दूर) में विक्रमार्क और उसके मित्र भट्टि की स्मृति में विक्रमार्केश्वर और भट्टीश्वर नामक मंदिर है। आलमूरू अर्थात युद्धपुरी। परंपरानुसार यहीं विक्रमार्क और सातवाहन का युद्ध हुआ और उज्जैन से आलमूरू तक विक्रमादित्य का राज्य था।

अब 'विक्रम बानी' सुनायेगा विक्रम गाथा

सार्वभौम सम्राट विक्रमादित्य को लेकर अनेक कथा-गाथाएँ हैं लेकिन बहुत कम लोगों को इस बात की जानकारी है कि विक्रमादित्य का पूरी दुनिया में हस्तक्षेप रहा है. सत्ता-शासन में उनसा शासक दुनिया में दूसरा कोई नहीं हुआ जिनका ज्ञान और धर्म के प्रति उनका अनुराग अद्‌भुत है. विक्रमादित्यकालीन अनेक संदर्भ और प्रसंगों को पिरोकर महाराजा विक्रमादित्य शोध पीठ ने फिल्म निर्माण का आरंभ किया है. यह फिल्में उन भ्रांतियों को दूर करती हैं जो अनकही कथाएँ हैं तो जानकारी के नये द्वार भी खोलती हैं जो आज समाज की जरूरत है. भारतीय ज्ञान परम्परा का गौरवशाली इतिहास और धर्म-संस्कृति के अनेक अनछुये पहलुओं पर छोटी-छोटी फिल्मों का निर्माण कर महाराजा विक्रमादित्य शोध पीठ के यूट्यूब चैनल 'भारत विक्रम' पर प्रसारित किया जा रहा है.

आज भारतीय समाज जिस संक्रमण के दौर से गुजर रहा है तब भारत और हिन्दु समाज की अवधारणा को समझना जरूरी हो जाता है. इस बारे में महाराजा विक्रमादित्य शोध पीठ के निदेशक श्रीराम तिवारी कहते हैं कि ये फिल्में महज फिल्म नहीं हैं बल्कि विक्रमकालीन उन परम्पराओं से समाज और खासतौर पर युवाओं को जोड़ने और समझाने का आग्रहपूर्ण प्रयास है. वे आगे कहते हैं कि श्रीराम मंदिर हमारी आस्था का मंदिर है. लेकिन अधिसंख्य भारतीय समाज इस बात से अनभिज्ञ है कि सम्राट विक्रमादित्य ने अयोध्या में श्रीराम मंदिर का निर्माण कराया था. यह जानकारी सतही ना होकर देश के सबसे बड़ी अदालत के फैसले में जानकारी दी गई है. यूट्यूब चैनल 'भारत विक्रम' पर इन सभी तथ्यों और स्थितियों का प्रामाणिक तौर पर फिल्मांकन किया गया है.

फिल्म निर्माण के बारे में शोध पीठ के निदेशक श्रीराम तिवारी कहते हैं कि अनेक विषय हैं जिन पर फिल्म निर्माण की आवश्यकता हमने महसूस की. यह इसलिये भी जरूरी है कि जिस तरह शकों ने भारतीय संस्कृति को क्षति पहुँचायी, वैसे ही आधी-अधूरी और गलत जानकारी के साथ सम्राट विक्रमादित्य को प्रस्तुत किया जा रहा है. इन गलतफहमियों को दूर कर हम सही संदर्भ और तर्क के साथ अपनी बात रख रहे हैं.

निदेशक श्री तिवारी कहते हैं कि यूट्यूब चैनल 'भारत विक्रम' अपनी आरंभिक अवस्था में ही लोकप्रिय हो रहा है, यह हमारे संतोष की बात है तो इस क्रम में आगे हमारा प्रयास है कि हम रेडियो के प्रभावी माध्यम का भी उपयोग करें. उनका कहना था कि इस क्रम में हम 'विक्रम बानी' के नाम से रेडियो प्रसारण आरंभ करने जा रहे हैं. कोशिश होगी कि 'विक्रम बानी' को रूचिकर श्रोता अपनी सुविधा से यात्रा के दौरान भी सुन सकें. निदेशक श्री तिवारी का कहना है कि यह समय अनुकूल है जब हम संचार माध्यमों का बखूबी उपयोग कर अपने पूर्वजों के गौरवशाली इतिहास का पुर्नरावलोकन कर उसे समाहित कर लें. महाराजा विक्रमादित्य शोध पीठ ने दस्तावेजीकरण की दृष्टि से करीब करीब 30 किताबों का प्रकाशन पूर्ण कर चुका है और अनेक किताबें प्रकाशनाधीन है. निदेशक श्री तिवारी का कहना है कि विक्रमकालीन इतिहास को जानने वाले सुधि लेखक उम्रदराज हैं और हम उनकी सहायता से यह कार्य पूर्ण कर पा रहे हैं. भारतीय संस्कृति, भारतीय ज्ञान परम्परा और नवाचार के इस प्रयास में महाराजा विक्रमादित्य शोध पीठ लगातार प्रयासरत है.

उल्लेखनीय है कि बीते 2 अप्रैल, वर्ष प्रतिपदा के अवसर पर मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान ने 'भारत विक्रम' यूट्यूब चैनल का लोकार्पण किया था। इस यूट्यूब चैनल के माध्यम से विक्रमकालीन इतिहास, संस्कृति और परम्परा का आख्यान छोटी फिल्मों के माध्यम से प्रसारित किया जाएगा। 'भारत विक्रम' श्रृंखला में अनेक फिल्मों का निर्माण किया जा रहा है जिसके प्रसारण का सिलसिला भी आरंभ हो चुका है। उज्जैन में 25 मार्च से 2 अप्रैल, 2022 तक सम्पन्न विक्रमोत्सव की रिपोर्ट के साथ अलग अलग भाषाओं में मंचित नाटक भी आप देख सकते हैं। सोफिया दास्तागोई द्वारा प्रस्तुत पढ़ंत की मोहक प्रस्तुति 'भारत विक्रम' पर देख सकते हैं। यूट्यूब पर 'भारत विक्रम' को देखने के लिए https://youtube.com/channel/UCpeZ-d1AJUKlJtSKpiHuUJw लॉगइन करें।

पुस्तक चर्चा/मनोज कुमार

राजा भोज और परमारकालीन नगर स्थापत्य

भारत में अनेक पराक्रमी राजाओं के इतिहास से हम सुविज्ञ हैं. इसके अलावा इन राजाओं का ज्ञान संसार बहुत व्यापक था और जब राजा भोज की चर्चा करते हैं तो पाते हैं कि वे एक कुशल प्रतापी और न्यायप्रिय राजा थे तो वे एक महान नगर शिल्पी भी थे. सुपरिचित विद्वान लेखिका निर्मला राजपुरोहित की पुस्तक 'राजा भोज और परमारकालीन नगर स्थापत्य' में राजा भोज के बारे में अनेक अनछुये पहलुओं पर पाठकों और नगर शिल्प में रूचि रखने वालों का ज्ञान बढ़ाती हैं. इस किताब में नगर स्थापत्य कला के साथ जल संरक्षण के प्रति राजा भोज की दृष्टि हमें जानने और समझने का अवसर देती है.

तकरीबन 200 पृष्ठों की यह किताब वर्तमान समय में और भी प्रासंगिक है. आज पूरी दुनिया जल संकट से गुजर रही है तब राजा भोज ने किस तरह जल संरक्षण के उपाय निहित किये थे, यह जानना जरूरी हो जाता था. नगर स्थापत्य की उनकी दृष्टि आज के अभियंताओं का नया पाठ पढ़ाती है. दशकों पूर्व निर्मित भवन आज भी यथास्थिति में हैं तो यह राजा भोज की दृष्टि और योजना का फलीभूत है. राजा भोज की नगर स्थापत्य कला को समझाने के लिए लेखिका ने मानचित्रों का उपयोग कर इसे और भी संग्रहणीय बना दिया है.

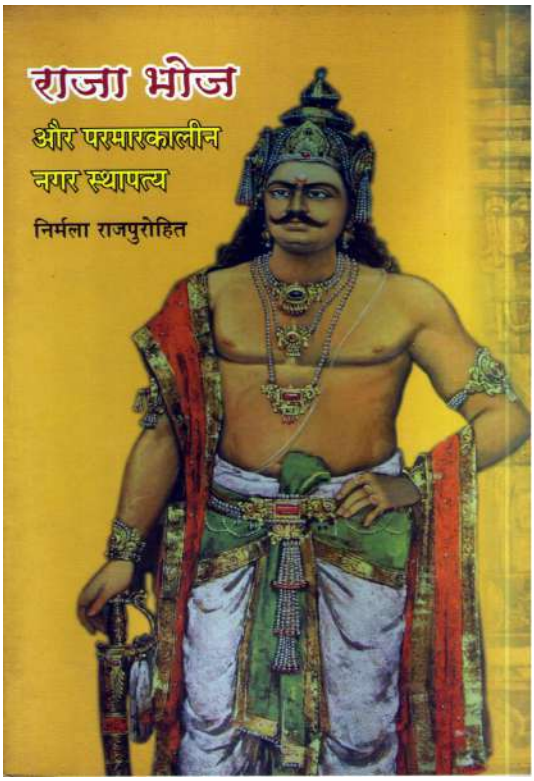

पुस्तक- राजा भोज और परमारकालीन नगर स्थापत्य
लेखक -निर्मला राजपुरोहित
प्रकाशक- स्वराज संस्थान संचालनालय, संस्कृति विभाग, मध्यप्रदेश शासन, भोपाल
मूल्य- 120

'वास्तु कला में प्रथम और महत्वपूर्ण कार्य है सुरक्षित और सुव्यवस्थित नगर की स्थापना. प्राचीन युग में नगर प्रायः राजधानी होते थे अथवा व्यापारिक मंडी अथवा धार्मिक स्थली. शत्रुओं के आक्रमण की सदा आशंका बनी रहती थी. इसलिए उसकी सुरक्षा की आवश्यकता होती थी. उस युग का जन धार्मिक और आस्थावान होता था अतः नगरी का शास्त्रानुमोदित होना भी आवश्यक था.'

-इसी पुस्तक से

महाराजा विक्रमादित्य शोध पीठ संस्थान स्वराज संस्थान संचालनालय, संस्कृति विभाग मध्यप्रदेश शासन के लिए 1, उदयन मार्ग, उज्जैन-456010 से प्रसारित. सम्पादक श्रीराम तिवारी. समन्वयक मनोज कुमार.
आलेख सेवा निःशुल्क वितरण के लिए. फोन : 0734-2521499 0755-2660407 e-mail : mvspujjain@gmail.com,vikramadityashodhpeeth@gmail.com